

सूरह नम्ल - 27



सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 93 आयतें हैं।

- इस सूरह में बताया गया है कि कुर्आन को अल्लाह की किताब न मानने और शिर्क से न रुकने का सब से बड़ा कारण सत्य को नकारना है। जो मायामोह में मग्न रहते हैं उन पर कुर्आन की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं होता और वे नबियों के इतिहास से कोई शिक्षा नहीं लेते।
- इस में मूसा (अलैहिस्सलाम) को फिरौन तथा उस की जाति की ओर भेजने और उन के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया उस का दुष्परिणाम बताया गया है।
- दावूद तथा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल राज्य की चर्चा कर के बताया गया है कि वह कैसे अल्लाह के आभारी भक्त बने रहे जिस के कारण (सबा) की रानी बिल्कीस इस्लाम लायी।
- इस में लूत तथा सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति के उपद्रव का दुष्परिणाम बताया गया है तथा एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- यह घोषणा भी की गई है कि कुर्आन ने मार्ग दर्शन की राह खोल दी है और भविष्य में भी इस के सत्य होने के लक्षण उजागर होते रहेंगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, सीन, मीमा। यह कुर्आन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।
2. मार्ग दर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।
3. जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।

طَسَّ تِلْكَ الْآيَاتِ الْقُرْآنِ وَكِتَابِ مُبِينٍ

هُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

4. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहके जा रहे हैं।
5. यही हैं जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।
6. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कुर्आन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।
7. (याद करो) जब कहा,^[1] मुसा ने अपने परिजनो मैं ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पास कोई सूचना लाऊँगा या लाऊँगा आग का कोई अँगार, ताकि तुम तापो।
8. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गया: शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस-पास है, और पवित्र है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।
9. हे मूसा यह मैं हूँ अल्लाह अति प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।
10. और फेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रेंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।
11. उस के सिवा जिस ने अत्याचार

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ
أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ هُمُ الْآخْسَرُونَ ۝

وَأَنَّا لَمُنْكَرٌ بَيْنَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَائِغًا مِنِّي
مَخْبِيًّا ۖ وَأَيْتُونِي بِسِهَابٍ مِّمَّنْ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَن فِي النَّارِ وَمَنْ
حَوْلَهَا وَسُبْحَنَ اللَّهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

يُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَالَّذِي عَصَاكَ فَلَئِمَّا رَأَاهَا قَدْ كَانَتْهَا جَانٌّ وَثِيَ
مُذْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَمُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخِإُ
لَدُنِّي الْمُرْسَلُونَ ۝

إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلْ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي

1 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदन से आ रहे थे। रात्री के समय वह मार्ग भूल गये। और शीत से बचाव के लिये आग की अवश्यता थी।

عَفْوٌ رَّحِيمٌ ۝

किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षमी दयावान् हूँ।

12. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फिरऔन तथा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लंघन कारियों में हैं।

وَادْخُلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ سُوءٍ سَتَى تَعْرِى إِلَيْتِ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

13. फिर जब आयी उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝

14. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

15. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान^[1], और दोनों ने कहा: प्रशंसा है उस अल्लाह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

16. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का, तथा उस ने कहा: हे लोगो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज़ से कुछ। वास्तव में

وَوَرِّثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مِنْ مَطَاقِ الطَّيْرِ وَأَوْتِنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ۝

1 अर्थात् विशेष ज्ञान जो नबूवत का ज्ञान है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया और इसी प्रकार अन्तिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस कुर्आन द्वारा प्रदान किया है।

यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।

17. तथा एकत्र कर दी गयीं सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिन्नों तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।
18. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्यूटियों की घाटी पर, तो एक च्यूटी ने कहा: हे च्यूटियो! प्रवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।
19. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर किया है। तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।
20. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा: क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हुदहुद को, या वह अनुपस्थितों में है?
21. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा, या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।
22. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकर) कहा: मैं ने ऐसी बात

وَجِئْرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودَهُ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ
فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾

حَتَّى إِذَا أَتَوْا عَلَى وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا
النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ
وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَى
وَالِدَيَّ وَلَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي
بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدَّ هُدًى لِّمَنْ
كَانَ مِنَ الْغَالِبِينَ ﴿٢٠﴾

لَأَعَذِّبَنَّكَ عَبْدًا بِأَشَدِّيدٍ أَوَّلًا إِذْ بَحَثَّتْهُ أُولِيَايَ نَتَقَى
بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢١﴾

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ مَحْطُ بِهِ

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ۝

का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है, और मैं लाया हूँ आप के पास "सबा"^[1] से एक विश्वासनीय सूचना।

23. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु से तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝

24. मैं ने उसे तथा उस की जाति को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा, और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अतः वह सुपथ पर नहीं आते।

وَجَدُتُهُمْ قَوْمًا يَسْبُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيْنُ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝

25. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को^[2] आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।

الَّذِينَ يَسْبُدُونَ لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْأَ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝

26. अल्लाह जिस के अतिरक्ति कोई बंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।

أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

27. (सुलैमान ने) कहा: हम देखेंगे कि तू सत्य वादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।

قَالَ سَتَنظُرُونِي أَوْ أُبَيِّنُ لَكُمْ آيَاتِي مِنْ الْكِتَابِ ۝

28. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे

إِذْ هَبُّ بَنِي إِسْرَءِيلَ هَذَا أَقْلَهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى عَنْهُمْ

1 सबा यमन का एक नगर है।

2 अर्थात् वर्षा तथा पौधों को।

فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

डाल दो उन की ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं?

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوْاِئِنَّ إِلَيْنِى أَلِى كِتَابٍ كَرِيمٍ ﴿٢٩﴾

29. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्व पूर्ण पत्र डाला गया है।

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾

30. वह सुलैमान की ओर से है, और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।

أَلَا تَعْلَمُوْا عَلَى وَثُوْنٍ مُّسْلِمِينَ ﴿٣١﴾

31. कि तुम मुझ पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُوْاِ أَفَتُونِىْ فِى أَمْرِى مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّى تَشْهَدُوْا بِى ﴿٣٢﴾

32. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।

قَالُوا نَحْنُ أَوْلُوْا قُوَّةً وَأُولُوْا بَأْسٍ شَدِيْدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِى مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿٣٣﴾

33. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्ति शाली तथा बड़े योद्धा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَافَهُمْ أَهْلًا اِدْلَءٍ ۖ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾

34. उस ने कहा: राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उजाड़ देते हैं और उस के आदरणीय वासियों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।

وَإِنِّ مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرْهُ لِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٥﴾

35. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि क्या लेकर आते हैं दूत?

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّوْنَ بِمَالِىَ فَمَا أَتٰنِ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا أَنْتُمْ بِلِ انْتُمْ بِهِدِيَّتُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٣٦﴾

36. तो जब वह (दूत) आया सुलैमान के पास, तो कहा: क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है।

जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्हीं अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।

37. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (बस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।

38. सुलैमान ने कहा: हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा^[1] उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें आज्ञाकारी हो कर।

39. कहा एक अतिकाय ने जिन्नों में से: मैं ला दूँगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हों अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हूँ।

40. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान था: मैं ला दूँगा उसे आप के पास इस से पहले कि आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहा: यह मेरे पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महान् है।

إِرجِعْ إِلَيْهِمْ قَلِيلًا يَتَّبِعُهُمْ يَஞُودٌ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٣٧﴾

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَؤُا ائْتِمُوا بِنِجْنِي بَعْرِشَهَا قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِن مَّقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِن فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي ؕ أَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ وَمَن شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ؕ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ رَآبِي عَسَىٰٓ أَن يَكْرِهَهُ ﴿٤٠﴾

1 जब सुलैमान ने उपहार वापिस कर दिया और धमकी दी तो रानी ने स्वयं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित होना उचित समझा। और अपने सेवकों के साथ फ़लस्तीन के लिये प्रस्थान किया, उस समय उन्होंने ने राज्यसदस्यों से यह बात कही।

41. कहा: परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पहचान जाती है या उन में से हो जाती है जो पहचानते न हों।
42. तो जब वह आई, तो कहा गया: क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहा: वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।
43. और रोक रखा था उसे (ईमान से) उन (पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (वन्दना) कर रही थी अल्लाह के सिवा। निश्चय वह काफ़िरो की जाति में से थी।
44. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश कर। तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौद) समझी और खोल दी^[1] अपनी दोनों पिंडलियाँ, (सुलैमान ने) कहा: यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण^[2] पर और (अब) मैं इस्लाम लाई सुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।
45. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को, कि तुम सब इबादत (वन्दना) करो अल्लाह की, तो अकस्मात् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।
46. उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्यों तुम

قَالَ نَكْرِضُوا الْحَاوِصَهَا نَنْظُرَ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُكَ قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ وَأُوتِينَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تُعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَبِطَتْهُ لُجَّةٌ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا قَالَتْ إِنَّهُ صَرْحٌ مُسَرَّدٌ مِنْ قَوَائِرٍ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

1 पानी से बचाव के लिये कपड़े पाईचे ऊपर कर लिये।

2 अर्थात् अन्य की पूजा-उपासना कर के।

शीघ्र चाहते हो बुराई^[1] को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये?

الْحَسَنَةُ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٧﴾

47. उन्होंने ने कहा: हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ हैं। (सालेह ने) कहा: तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास^[2] है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।

قَالُوا الظُّلُمَاتُ بَيْنَكَ وَبَيْنَ مَعَكَ قَالَ طَرُّكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٢٨﴾

48. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करते थे धरती में, और सुधार नहीं करते थे।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ سَعَةُ الرَّهْطِ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٢٩﴾

49. उन्होंने ने कहा: आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के विनाश के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) हैं।

قَالُوا نَاقِصُوا بِلِلَّهِ لَتَنْبِتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَنَهِكَ أَهْلَهُ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٣٠﴾

50. और उन्होंने ने एक षडयंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।

وَمَكْرُؤٌ مَكْرُؤٌ مَكْرُؤٌ مَكْرُؤٌ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٣١﴾

51. तो देखो कैसा रहा उन के षडयंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ أَنَا دَمَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٢﴾

52. तो यह उन के घर हैं उजाड़ पड़े हुये

فَإِنَّكَ بَيُّوتُهُمْ خَاوِيَةٌ بِمَا ظَلَمُوا إِنَّ فِي ذَلِكَ

1 अर्थात ईमान लाने के बजाये इन्कार क्यों कर रहे हो?

2 अर्थात तुम पर जो अकाल पड़ा है वह अल्लाह की ओर से है जिसे तुम्हारे कुकर्मों के कारण अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और यह अशुभ मेरे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे कुफ्र के कारण है। (फ़तुल कदीर)

لَا يَأْتِيَهُمْ لِقَوْمٌ يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

उन के अत्याचार के कारण, निश्चय इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।

53. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान लाये, और (अब्राह से) डर रहे थे।

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

54. तथा लूत को (भेजा), जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम^[1] आँखें रखते हो?

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٢٩﴾

55. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो काम वासना की पूर्ति के लिये? तुम लोग बड़े ना समझ हो।

أَيْنَكُمُ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٣٠﴾

56. तो उस की जाति का उत्तर बस यह था कि उन्होंने ने कहा: लूत के परिजनों को निकाल दो अपने नगर से, वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र बन रहे हैं।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُو آلَ لُوطٍ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنْاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ﴿٣١﴾

57. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस के परिवार को, उस की पत्नी के सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया पीछे रह जाने वालों में।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٢﴾

58. और हम ने उन पर बहुत अधिक वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا نِسَاءَ مِطْرِ النَّذِيرِينَ ﴿٣٣﴾

59. आप कह दें: सब प्रशंसा अब्राह के लिये है, और सलाम है उस के उन भक्तों पर जिन को उस ने चुन

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَى ۚ إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ مِمَّا يَشْرِكُونَ ﴿٣٤﴾

1 (देखिये: सूरह आराफ़, 84, और सूरह हूद, 82, 83)। इस्लाम में स्त्री से भी अस्वभाविक संभोग वर्जित है। (सुनन नसाई, हदीस नं० - 8985, और सुनन इब्ने माजा, हदीस नं० - 1924)।

लिया। क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते हैं?

60. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और उतारा है तुम्हारे लिये आकाश से जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग़, तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।

61. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायीं, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोक। तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।

62. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

63. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अँधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

64. या वह है जो आरंभ करता है

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنبِتُوا شَجَرَهَا ۚ
عَلَّاهُ مَعَ اللَّهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعِدُونَ ۝

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْهُ لَا يَعْلَمُونَ ۝

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيْحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ
عَلَّاهُ مَعَ اللَّهِ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ

उत्पत्ति को, फिर उसे दुहरायेगा
तथा जो तुम्हें जीविका देता है
आकाश तथा धरती से, क्या कोई
पुज्य है अल्लाह के साथ? आप कह
दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम
सच्चे^[1] हो।

65. आप कह दें कि नहीं जानता है जो
आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को
अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते
कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।

66. बल्कि समाप्त हो गया है उन का
ज्ञान आखिरत (परलोक) के विषय
में, बल्कि वे द्विधा में हैं, बल्कि वे
उस से अंधे हैं।

67. और कहा काफ़िरो ने: क्या जब
हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे
पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले^[2]
जायेंगे।

68. हमें इस का वचन दिया जा चुका है
तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले,
यह तो बस अगलों की बनायी हुई
कथायें हैं।

69. (हे नबी!) आप कह दें कि
चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि
कैसा हुआ अपराधियों का परिणाम।

يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ءَالَهُ مَعَ اللَّهِ
قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ
إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

بَلْ أَذْرَكَ عَلَيْهِمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي
شَكٍّ مِنْهَا ۚ بَلْ هُمْ فِيهَا عَمُونَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا
وَأَبَاؤُنَا إِنَّا لِلْمُغْرَجِينَ ۝

لَقَدْ وُعِدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ
إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

1 आयत नं० 60 से यहाँ तक का सारांश यह है कि जब अल्लाह ने ही पूरे विश्व की उत्पत्ति की है और सब की व्यवस्था वही कर रहा है, और उस का कोई साक्षी नहीं तो फिर यह मिथ्या पूज्य अल्लाह के साथ कहाँ से आ गये? यह तो ज्ञान और समझ में आने की बात नहीं और न इस का कोई प्रमाण है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से जीवित निकाले जायेंगे।

70. और आप शोक न करें उन पर और न किसी संकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहे हैं।

71. तथा वह कहते हैं: कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?

72. आप कह दें: संभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।

73. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों^[1] पर, परन्तु उन में से अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।

74. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

75. और कोई छुपी चीज़ नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में^[2] है।

76. निःसंदेह यह कुर्आन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिकतर बातों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

77. और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।

78. निःसंदेह आप का पालनहार^[3] निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

قُلْ عَلَىٰ أَن يَكُونَ رَدٌّ لَّكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفُصِّلُ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَآءَ نِیلَ أَكْثَرِ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ ذُرِّيَّةَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۝

1 अर्थात् लोगों को अपने अनुग्रह से अवसर देता रहता है।

2 इस से तात्पर्य (लौहे महफूज़) सुरक्षित पुस्तक है जिस में सब कुछ अंकित है।

3 अर्थात् प्रलय के दिन। और सत्य तथा असत्य को अलग कर के उस का बदला देगा।

से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

79. अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर, वस्तुतः आप खुले सत्य पर हैं।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝

80. वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को। और न सुना सकेंगे बहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर^[1] कर।

إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمِعُ الْقُمْرَ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝

81. तथा आप अंधे को मार्ग दर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते हैं जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हो।

وَمَا آتَتْ بِهَدْيٍ الْعُتْبَىٰ عَنْ صَلَاتِهِمْ إِنَّ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ يَأْتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝

82. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर^[2], तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन^[3] से कि लोग हमारी आयतों पर

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَالْوَايَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝

1 अर्थात् जिन की अंतरात्मा मर चुकी हो, और जिन की दुराग्रह ने सत्य और असत्य का अन्तर समझने की क्षमता खो दी हो।

2 अर्थात् प्रलय होने का समय।

3 यह पशु वही है जो प्रलय के समीप होने का एक लक्षण है जैसा कि हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि प्रलय उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो, उन में से एक पशु का निकलना है। (देखिये: सहीह मुस्लिम हदीस नं॰: 2901)

आप का दूसरा कथन यह है कि सर्व प्रथम जो लक्षण होगा वह सूर्य का पश्चिम से निकलना होगा तथा पूर्वान्ध से पहले पशु का निकलना इन में से जो भी पहले होगा शीघ्र ही दूसरा उस के पश्चात् होगा। (देखिये: सहीह मुस्लिम हदीस नं॰: 2941)

और यह पशु मानव-भाषा में बात करेगा जो अल्लाह के सामर्थ्य का एक चिन्ह होगा।

विश्वास नहीं करते थे।

83. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को, फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।

84. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगा: क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?

85. और सिद्ध हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।

86. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई ताकि वह शान्त रहें उस में, तथा दिन को दिखाने वाला^[1] वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

87. और जिस दिन फूँका जायेगा^[2] सूर (नरसिंघा) में, तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे विवश हो कर।

88. और तुम देखते हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) हैं, जब

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِمَّنْ
يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ أَلْكَابُكُمْ بِآيَاتِنَا وَلَمْ
تَحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا ذَاكُمْ تُعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ
لَا يَنْطِقُونَ ﴿٨٥﴾

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَقَرَّعَ مِنْ فِي
السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ
اللَّهُ وَكُلٌّ أَتَوْهُ ذُخْرَيْنَ ﴿٨٧﴾

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِيَ تَمُرُّ

1 जिस के प्रकाश में वह देखें और अपनी जीविका के लिये प्रयास करें।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

कि वह (उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान, यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज़ को, निश्चय वह भली-भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

89. जो भलाई^[1] लायेगा, तो उस के लिये उस से उत्तम (प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।

90. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोंक दिये जायेंगे औंधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा): तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।

91. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार की इबादत (बंदना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी के अधिकार में है प्रत्येक चीज़, और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।

92. तथा कुर्आन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।

93. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें

السَّحَابِ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقَنَ كُلُّ شَيْءٍ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَهُمْ مِنْ فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ۝

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَلَبَتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ يُخْرَجُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَاعْرِضُوا عَنْهَا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

1 अर्थात् एक अल्लाह के प्रति आस्था तथा तदानुसार कर्म ले कर प्रलय के दिन आयेगा।

तुम पहचान^[1] लोगे और तुम्हारा
पालनहार उस से अचेत नहीं है जो
कुछ तुम कर रहे हो।

1 (देखिये सूरह हा, मीम सज्दा, आयत- 53)